International Journal of Scientific Research in Science and Technology
Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X (www.ijsrst.com)
doi : https://doi.org/10.32628/IJSRST

रायगढ़ जिले के ग्रामीण क्षेत्र में छात्राओं की उच्च शिक्षा और महिला अधिकारिता पर एक अध्ययन

रूबी माणिक, रिसर्च स्कॉलर, कलिंग यूनिवर्सिटी

Article Info
Volume 9, Issue 5
Page Number : 30-32

Publication Issue
September-October-2022

Article History
Accepted : 20 Aug 2022
Published : 05 Sep 2022

सार

छात्राओं के सशक्तिकरण का विषय पिछले कुछ दशकों से छत्तीसगढ़ सहित पूरी दुनिया में एक ज्वलंत मुद्दा बनता जा रहा है। लड़कियों और महिलाओं को अब समानता के लिए और इंतजार नहीं किया जा सकता है। चूंकि उच्च शिक्षा हमारे समाज को सुधारने में मदद करती है, इसलिए उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाली लड़कियों को महिला सशक्तिकरण के मुद्दे के साथ-साथ ध्यान में रखा जाना चाहिए। इसलिए, वर्तमान पेपर में रायगढ़ जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च शिक्षा में छात्राओं के महिला सशक्तिकरण के स्तर का अध्ययन करने का प्रस्ताव है। प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य उच्च शिक्षा में निर्णय लेने के संबंध में छात्राओं के सशक्तिकरण के स्तर का पता लगाना था।

कीवर्ड :उच्च शिक्षा, छात्राएं, महिला सशक्तिकरण और ग्रामीण क्षेत्र

अधिकारिता का अर्थ:

लगभग हर समाज में और जीवन के हर क्षेत्र में महिलाओं को असमान स्थिति और स्थिति का सामना करना पड़ता है; इस प्रकार समान अवसर प्रदान करके उन्हें सशक्त बनाने की आवश्यकता है। सशक्तिकरण शब्द एक बहुआयामी सामाजिक प्रक्रिया है और यह लोगों को अपने जीवन पर नियंत्रण पाने में मदद करती है। इसके अलावा, इसे एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में कहा जा सकता है जो लोगों को अपने जीवन, अपने समुदायों और अपने समाज में उपयोग करने के लिए उन मुद्दों पर कार्य करके शक्ति को बढ़ावा देती है, जिन्हें वे महत्वपूर्ण समझते हैं। समाज के सर्वांगीण विकास के लिए लड़कियों का सशक्तिकरण महत्वपूर्ण है। सशक्तिकरण शब्द का अलग-अलग संदर्भ में अलग-अलग अर्थ है। सशक्तिकरण शब्द में आत्म-शक्ति, आत्म-निर्णय, स्वतंत्रता, आत्म-शक्ति, आत्म-नियंत्रण, आत्मनिर्भरता, अपने अधिकारों के लिए लड़ना आदि शामिल हैं। एक महिला परिवार का मूल है और मानव समाज का आधा हिस्सा है। वह भावनात्मक रूप से हर जगह परिवार के लिए एक बाध्यकारी शक्ति है। वह सभी धार्मिक समारोहों और सामाजिक कार्यों में पुरुषों के साथ समान रूप से हिस्सा लेती हैं। भारत में महिलाओं को समान शिक्षा, समान रोजगार, समान वेतन और पुरुषों के समान दर्जा, स्वाभिमान, गौरव और स्वाभिमान से वंचित किया गया है। वे खुद को कैदी के रूप में देखते हैं जो आज्ञाकारिता और अनुरूपता के लिए आशाहीन हैं, केवल मृत्यु में मुक्ति और स्वतंत्रता पाने के लिए। फिर भी, राष्ट्रीय विकास में महिलाओं का योगदान महत्वपूर्ण है, और राष्ट्र के आर्थिक विकास और सामाजिक प्रगति के लिए उनकी मुक्ति आवश्यक है। महिलाओं को विकास प्रक्रिया में एक शक्ति के रूप में पहचाना जाना चाहिए और इसमें सक्रिय रूप से शामिल होना चाहिए।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

वर्तमान अध्ययन निर्णय लेने, उच्च शिक्षा में भागीदारी और सामाजिक, राजनीतिक और कानूनी जागरूकता के संबंध में छात्राओं के सशक्तिकरण के स्तर का आकलन करने के लिए किया गया है, जिसके माध्यम से हम उनकी स्थिति से परिचित हो सकते हैं। यह सम्मान।

संबंधित साहित्य की समीक्षा करें

भदौरिया और मृदुला, (2005) ने अपने लेख" उच्च शिक्षा तक महिलाओं की पहुंच "में विश्लेषण किया है। परिणामों से पता चला कि महिलाओं की उच्च शिक्षा के बारे में पुनर्विचार करने की आवश्यकता है।38 .84% महिलाएं उच्च शिक्षा प्राप्त करती हैं, उच्च शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित नहीं करती हैं। तकनीकी विषयों जैसे। इंजीनियरिंग, चिकित्सा, पशु चिकित्सा विज्ञान और कानून को बिना गुणवत्ता के छोटे शहरों और कस्बों के कॉलेजों में इन विषयों के माध्यम से महिलाओं की पहुंच के लिए बढ़ाया जाना चाहिए। महिलाओं के लिए लघु अवधि के विविध पाठ्यक्रम शुरू किए जाने चाहिए जो बड़े असंगठित और संगठित क्षेत्र को पूरा कर सकें। उपरोक्त कदमों के अलावा सामाजिक जागरूकता, सामाजिक वातावरण और महिलाओं के पक्ष में सामाजिक सुरक्षा ऐसे बुनियादी बिंदु हैं जिन पर ध्यान दिया जाना चाहिए। धमीजा और पांडा 2006ने "शिक्षा के माध्यम से महिला सशक्तिकरण :विश्वविद्यालयों की भूमिका "पर अध्ययन किया। अध्ययन से पता चला कि महिलाओं को शिक्षित करने से पूरे समाज को लाभ होता है और इस शिक्षा के आधार पर वे हमारे समाज में अपनी स्थिति का आनंद लेते हैं। पुरुषों की शिक्षा की तुलना में इसका गरीबी और विकास पर अधिक महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यह बाल स्वास्थ्य में सुधार और शिशु मृत्यु दर को कम करने में सबसे प्रभावशाली कारकों में से एक है। खान, जे .2020 ने" महिला सशक्तिकरण और रोजगार लिंग अध्ययन पृष्ठभूमि अध्ययन "शीर्षक से एक लेख प्रकाशित किया है। लेख मुख्य रूप से घरेलू स्तर पर निर्णय लेने के अधिकार के माध्यम से महिला सशक्तिकरण और रोजगार पर केंद्रित है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य घरेलू स्तर पर निर्णय लेने की शक्ति के माध्यम से महिला सशक्तिकरण और रोजगार की जांच करना था। ने पाया है कि घरेलू स्तर पर महिला सशक्तिकरण, रोजगार और निर्णय लेने की शक्ति के बीच सकारात्मक संबंध है।

अध्ययन का उद्देश्य

अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य थे:

1. अपने इलाके के संबंध में किशोरियों के सशक्तिकरण में अंतर का पता लगाना
2. निर्णय के संबंध में ग्रामीण और शहरी किशोर छात्राओं के बीच अंतर का अध्ययन करना बनाना।

अध्ययन की परिकल्पना

अध्ययन के उद्देश्यों के आधार पर निम्नलिखित परिकल्पनाएँ तैयार की गईं:

Ho: किशोर लड़कियों के सशक्तिकरण में कोई महत्वपूर्ण स्थानीय अंतर नहीं होगा

Ho: ग्रामीण और शहरी किशोर छात्राओं के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर मौजूद नहीं है निर्णय लेने के संबंध में

जनसंख्या :वर्तमान अध्ययन के लिए शहरी छात्र वे हैं जो नगरपालिका सीमा के भीतर आते हैं और ग्रामीण छात्र वे हैं जो नगर सीमा से परे आते हैं। जनसंख्या वर्तमान जांच में, सरकार की किशोर लड़कियां। रायगढ़ जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों ने जनसंख्या का गठन किया।

उपकरण :डॉ .देवेंद्र सिंह सिसोदिया और डॉ .अल्पना सिंह द्वारा टूल यूज़्ड एडोलसेंट गर्ल्स एम्पावरमेंट स्केल) 2009(

विश्लेषण

तालिका1 : किशोर लड़कियों के उनके सशक्तिकरण के औसत स्कोर का महत्वपूर्ण अनुपात दिखा रहा है।

S.No.	Variables	N	M	σ	C.R.	स्तर का महत्व
1	किशोरियों का सशक्तिकरण	85	201.36	18.55	3.56	0. 01स्तर पर महत्वपूर्ण
2		85	190.34	11.21		

तालिका2 : ग्रामीण और शहरी किशोर छात्राओं के बीच अंतर दिखा रहा है

	निर्णय लेना						
क्षेत्र	N	Mean	Std. Deviation	Mean Difference	t	Df	Sig. (2- tailed)
ग्रामीण	85	22.29	4.911	-2.798	-3.140	193	.000
शहरी	85	25.15	4.685				

निष्कर्ष :अध्ययन के निष्कर्षों के अनुसार यह पता चला है कि ग्रामीण और शहरी क्षेत्र की किशोर लड़कियों के सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण अंतर हैं और औसत स्कोर की तुलना करने पर हमें पता चलता है कि ग्रामीण क्षेत्र से संबंधित लड़कियों का औसत स्कोर शहरी समकक्षों की तुलना में अधिक है। शैक्षिक निहितार्थ अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित निहितार्थ निकाले गए:

1. शिक्षा व्यक्ति के जीवन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। एक लड़की शिक्षित होगी तो पूरा परिवार शिक्षित होगा। शिक्षा लड़कियों को सशक्त बनाने में मदद करती है।

2. अध्ययन के निष्कर्षों से पता चला कि लड़कियों के सशक्तिकरण पर इलाके का महत्वपूर्ण प्रभाव है। यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि लड़कियों के लिए कुछ जागरूकता कार्यक्रमों की व्यवस्था करने के लिए एक स्कूल या संस्थानों की तत्काल आवश्यकता होनी चाहिए कि वे अपने समाज के प्रति अपनी भूमिका जिम्मेदारियों को समझें।

3. "निर्णय लेने के संबंध में ग्रामीण और शहरी किशोर छात्राओं के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर मौजूद नहीं है "को खारिज कर दिया जाता है। निष्कर्ष बताते हैं कि निर्णय लेने के मामले में ग्रामीण किशोर लड़कियां शहरी किशोर लड़कियों में अपने समकक्षों की तुलना में कम सशक्त हैं। इसके अलावा, औसत मूल्यों में अंतर काफी महत्वपूर्ण है, इस प्रकार शहरी और ग्रामीण कॉलेजों में किशोर लड़कियों के पास निर्णय लेने के संबंध में अलग-अलग जागरूकता स्तर हैं। शहरी किशोरियों के माध्य का अधिक महत्व दर्शाता है कि वहां की लड़कियों में संबंधित आयाम के संबंध में अधिक जागरूकता है। ग्रामीण क्षेत्र में पारिवारिक वातावरण और पालन-पोषण शैली में सुधार की आवश्यकता है। अन्य शोधों से पता चला है कि पारिवारिक वातावरण व्यक्तिगत स्वायत्तता के अवसर प्रदान करता है और परिवार के निर्णय लेने में शुरुआती किशोरों की भूमिका को प्रोत्साहित करता है जो सकारात्मक परिणामों से जुड़े होते हैं जैसे आत्म सम्मान, आत्मनिर्भरता, किशोर और छात्र शिक्षक संबंधों से संतुष्टि, सकारात्मक समायोजन और उन्नत नैतिक तर्क.

संदर्भग्रंथ

1. Bhadauria, M. (2005). Access of Women to Higher Education. University News, 43(06), 13.
2. Bird and Espey, “Adolescent girl empowerment” cited in www.chronic poverty.org, 2010
3. Booja, R.R, “Catching on as tool for instruction, teachers use informative WebPages”, Available at www.iapsych.com/edblogs.pdf, 2005.
4. Dhamija, N., & Panda, S. K. (2006). Women empowerment through education: role of universities. University News, 44(27), 12-15.
5. Koul, L (1997) : Methodology of Educational Research, Vikas Publishing House, Noida, New Delhi, 4th Edition
6. Saha Kaberi (2012) Statistics in Education and Psychology, Asian Books Private Limited, New Delhi